315hi30B

30

सांस्क तिक उत्पादन

बर्तन और तवे, चित्र, कपड़े, साहित्य और भोजन अन्य चीजों के साथ मिलकर हमारी संस्कृति के अंग बनते हैं। इस पाठ में हम देखेंगे कि इनमें से कुछ का उत्पादन किस तरह होता है, कौन उनका उत्पादन करता है और कौन उनका इस्तेमाल करता है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप :

- चित्र बनाने में किन तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता था और वे किनके लिए बनाई जाती थीं,
- भारत में निर्मित विभिन्न प्रकार के वस्त्र और पोशाकें कैसी थीं,
- महाकाव्यों से लेकर लोकगीतों तक में मिलने वाले भारत के सम द्ध और विविधतापूर्ण साहित्य और
- खाद्य उत्पादन का स्वरूप और भारत के विभिन्न भागों में खाद्य पदार्थों की व्यापक विविधता।

30.1 चित्रकला, कलाकार और संरक्षक

इस भाग में हम अपने कलाकारों और उनकी कला के बारे में समझने की कोशिश करेंगे। उन्होंने क्या पेंट किया, किससे किया और किसके लिए किया?

चित्र 30.1 हड़प्पा के पेंट किए हुए मिट्टी के बर्तन

अतीत में कला और शिल्प दैनिक जीवन के हिस्से थे और जो उपयोगी था, वह सुंदर भी था। हमारे पूर्वजों द्वारा इस्तेमाल किए जानेवाले बर्तनों और तवों, उनके द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों और जिन घरों में वे रहते थे, उन पर विभिन्न प्रकार की आक तियाँ बनी होती थीं।

सबसे उत्क ष्ट डिजाइन स्त्रियों द्वारा अपने घरों की देहरी पर चावल के आटे, हल्दी और कुमकुम के चूरे से बनाए जाते थे। मधुबनी चित्रकला बिहार की एक ऐसी ही ग्रामीण परंपरा से विकसित हुई, जिनमें जन्माष्टमी (भगवान क ष्ण का जन्म–दिवस) के त्यौहार पर और साथ ही अन्य उत्सवों पर भी दीवारों, कागज या किसी अन्य चीज पर कृष्ण के जीवन के द श्य उकेरे जाते थे। कला के इन द ष्टांतों का धार्मिक उद्देश्य होता था तथा इन्हें पवित्र माना जाता हैं।

हमें प्राप्त प्राचीनतम कला गुफा–कला हैं, जो शिकार करने और खाद्य–संग्राहक जनजातियों द्वारा बनाई गई है। इनमें से सबसे प्रसिद्ध कला उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर और बांदा, मध्य प्रदेश में भोपाल के निकट भीमबेटका और रायगढ़ के निकट सिंगनपुर, विंध्याचल पर्वतमाला की महादेव पहाड़ियों और कर्नाटक में बेल्लारी की गुफाओं और शैल–आश्रयों में पाई जाती हैं। ये चित्र प्रायः शिकार के द श्य हैं जो हमें उस क्षेत्र की वनस्पति और पशु–जीवन तथा प्रारंभिक स्त्री–पुरुषों द्वारा प्रयुक्त उपकरणों के बारे में जानकारी देते हैं। ये धनुष और बाण या कुल्हाड़ी जैसे सरल उपकरण थे। हमें नहीं पता कि असल में ये चित्र क्यों बनाए जाते थे, पर संभव है कि इनका कोई जादुई महत्व हो और ये शिकार में सफलता सुनिश्चित करने के लिए बनाए जाते रहे हों।

प्रारंभिक स्त्री–पुरुष ने जहां ये कला अपनी खुद की जरूरतों के लिए बनाई, वहीं बाद के समय में कला आम तौर पर शाही संरक्षण में बनाई जाती थी, जिसका मतलब है कि राजा उन्हें बनवाने के लिए भुगतान करते थे और कभी–कभी कलाकार का भरण–पोषण भी करते थे।

इनमें से प्राचीनतम कला बाघ (मध्यप्रदेश) की गुफाओं और एलोरा तथा अजंता (महाराष्ट्र) में पाई जाती हैं। अजंता में चित्र का विषय बुद्ध के जीवन से लिया गया है, विशेषकर जातक कथाओं में किए गए वर्णन से, जिनमें बुद्ध के अनेक जीवनों का उल्लेख है। बौद्ध धर्म के बारे में आप पाठ संख्या 31 में और पढ़ेंगे। उनमें कुछ दश्य दैनिक जीवन के भी हैं, जैसे कि अजंता गुफाओं में अपने श्रंगार में संलग्न राजकुमारी का प्रसिद्ध चित्र अजंता और एलोरा की कलाओं को गुप्त और वाकाटक शासकों ने संरक्षण प्रदान किया था और वे मोटे तौर पर चौथी से छठी शताब्दी के बीच की हैं। ये चित्र अपने अमिट रंगों की दष्टि से उल्लेखनीय हैं। ऐसा माना जाता है कि छठी से दसवीं शताब्दी के बीच शासन करने वाले पल्लव राजाओं के समय की महाबलिपुरम गुफा की कला अजंता और एलोरा की कला में इस्तेमाल की गई कलात्मक तकनीकों से प्रेरित थी।

महाबलिपुरम (चेन्नई के निकट स्थित) के चट्टानें काटकर बनाए गए मंदिर मामल्लन नरसिम्हा पल्लवन के समय के हैं, जिसने सातवीं शताब्दी में शासन किया। यहां गुफाओं के आंतरिक भागों में और चट्टानों की सतह पर महाभारत के द श्य चित्रित करने वाले खूबसूरत चित्र और मूर्तियां बनाए गए हैं।

चित्रकला का कलात्मक वस्तुओं के रूप में विकास शाही दरबारों और कस्बों व शहरों में हुआ। ऐसी परंपराओं में हम मुगलकालीन लघुचित्रों की गणना कर सकते हैं। मुगल चित्रकला (16वीं से 18वीं शताब्दी के बीच बनाई गई) अक्सर ईरानी (सफवी) और हिंदुस्तानी परंपराओं का खूबसूरत मिश्रण होती थी। मुगल और राजपूत कलाकारों ने अपनी अलग शैलियों के बावजूद एक–दूसरे को प्रभावित किया। जिल्दसाजी और पांडुलिपि–चित्रण दो संबद्ध कलाएं थीं, जो इसी समय विकसित हुईं। अत्यधिक चित्रित पादशाहनामा पांडुलिपि–चित्रण की कला में पारंगत कुशल फारसी कारीगरों की कारीगरी का अच्छा उदाहरण है। अन्य प्रसिद्ध सचित्र पांडुलिपियों में अकबरनामा शामिल है। ये दोनों अपनी उपलब्धियों का जश्न राजाओं के जीवन चरित्र हैं।

अन्य उदाहरण सचित्र जैन पांडुलिपियां हैं। ये पांडुलिपियां छठी शताब्दी से प्रकट होनी शुरू हुईं। जैनियों ने अपने प्राचीन ज्ञान को लिखकर सुरक्षित रखने का निश्चय किया। कुछ मामलों में पांडुलिपि तैयार करने के लिए सौदागरों ने कलाकारों को भुगतान किया। ये पांडुलिपियां लघुचित्रों द्वारा खूबसूरती से चित्रित की गई हैं। ऐसा माना जाता है कि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव खुद भी एक कुशल चित्रकार थे। प्रारंभिक सचित्र जैन पांडुलिपियों में अष्टसहस्रिका प्रज्ञा पारमिता शामिल है। जैन धर्म और दर्शन पर सबसे प्रसिद्ध लघुचित्र चित्रकला त्रिलोक्य दीपिका है।

प्रारंभिक चित्रकला फुरसन में बनाई जानेवाली कला–कृतियां थीं, जबकि कुछ आधुनिक कला–कृतियां तात्कालिक जरूरतों की पूर्ति के लिए तेजी से बनाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, होर्डिंग्स, पोस्टर और विज्ञापन–फिल्में जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए बनाई जाती हैं और हर हफ्ते बदल जाती हैं। प्रारंभिक चित्रकला के विपरीत इन होर्डिंग्स का जीवन छोटा होता है, क्योंकि वे बार–बार बदल दिए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 30.1

1. सही या गलत का निशान लगाएं

   क. मधुबनी चित्रकला कर्मकांडों और धार्मिक परंपराओं के रूप में शुरू हुईं।

   ख. गुफा–चित्रकला को शाही संरक्षण मिला।

   ग. अकबरनामा और पादशाहनामा राजाओं के जीवन–चरित्र?

2. कुछ स्थानों के नाम लिखें जहां प्रारंभिक गुफा–चित्रकला पाई जाती हैं।

30.2 भारतीय वस्त्र और पोशाकें

भौगोलिक और जलवायु संबंधी कारकों ने भारतीय लोगों के पहनावे को बहुत प्रभावित किया है। उत्तर भारत में जहां ऊनी और सूती दोनों तरह के कपड़े पहनते हैं, वहीं गरम जलवायु वाले दक्षिण भारत में लोग केवल सूती पकड़े पहनते हैं। गरम क्षेत्रों में पुरुषों के पहनावे में एक ऊपरी कपड़ा और लगभग डेढ़ गज का निचला कपड़ा शामिल है। उत्तर

भारत में पुरुष सिली हुई कमीज और पतलून भी पहनते हैं, जिन्हें कुरता–पाजामा कहते हैं। स्त्रियां या तो छह गज का बिना सिला कपड़ा पहनती हैं, जिसे साड़ी कहते हैं या फिर पुरुषों जैसे सिले हुए कपड़े, जो कुरता और सलवार कहलाते हैं। साड़ी का पहनावा विभिन्न क्षेत्रों की सांस्क तिक परंपराओं पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र और तमिलनाडु की स्त्रियां नौ गज की साड़ी पहनती हैं, जिसमें टांगों के बीच एक विभाजक होता है, जबकि केरल की स्त्रियां सिर्फ टखनों तक आने वाली चार या पांच गज की साड़ी पहनती हैं।

ऐसा माना जाता है कि प्रारंभिक भारत में पहनावा बिना सिले कपड़ों का होता था। कहना कठिन है कि भारतीयों ने सिले हुए कपड़े कब पहनने शुरू किए, पर प्रारंभिक ईसा युग की चित्रकला और मूर्तियों में कुषाण पहरेदार और सैनिक पतलून और जैकेट पहने दिखाए गए हैं। अमरावती (आंध्र प्रदेश) अथवा ब हदीश्वरम (तमिलनाडु) जैसी प्राचीन मूर्तियों में केवल सेवक वर्ग और नर्तकियां ही सिले हुए कपड़ों में चित्रित की गई हैं, राजा या देवता नहीं।

राष्ट्रीय संग्रहालय में मथुरा संग्रहालय से लाई गई कनिष्क की बिना सिर की मूर्ति कोट पहने है।

भारत में कपास का उत्पादन प्रागैतिहासिक युगों से हो रहा है। हड़प्पा सभ्यता के सबसे बड़े शहरों में से एक मोहनजोदड़ो में कपास के प्रयोग के पक्के प्रमाण मिलते हैं। पुरातत्त्ववेत्ताओं को खुदाई में तकले प्राप्त हुए हैं। कपड़े बुननेवाले करघे के बारे में प्राचीनतम संदर्भ अथर्ववेद में मिलता है। कताई महिलाओं, खासकर विधवा और अविवाहिता स्त्रियों का काम था।

भारतीय वस्त्रों में संस्कृति झलकती है। उनकी हर चीज महत्वपूर्ण है – चुने गए रंग, आक ति और अवसर, जिन पर वे पहने जाते हैं। लाल उर्वरता का सूचक है और आम तौर पर वधू द्वारा अपनी शादी के अवसर पर पहना जाता है। गेरुआ और सफेद शुद्धता और त्याग के सूचक हैं और आम तौर पर आध्यात्मिक व्यक्तियों और विधवाओं द्वारा पहने जाते हैं। काला अशुभ माना जाता है, हालांकि दक्षिण भारत में गर्भवती स्त्रियां काले कपड़े पहनती हैं। संभवतः बुरी नजर से बचने के लिए वे ऐसा करती हैं। रंगाई परंपरागत रूप से नील और मजीठे जैसे वनस्पति–रंगों से की जाती थी, हालांकि अब ज्यादातर रंगरेजों ने सस्ते रासायनिक रंगों से रंगाई करनी शुरू कर दी है।

वस्त्रों पर आक तियाँ ज्यामितीय होती थीं। विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त वस्त्रों पर विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों और जानवरों के चित्र हमें यह जानकारी देते हैं कि वे लोग किन चीजों से परिचित थे और किन चीजों को महत्वपूर्ण समझते थे। कमल या आम की आक ति भारत के ज्यादातर भागों में लोकप्रिय थी। भारत वस्त्रों की एक सम द्ध विविधता उत्पादित करता है। वाराणसी का जरीदार रेशम जिसे जामदानी और जामेवर कहा जाता है, कांचीपुरम की सोने की किनारियों वाला रेशम और असम, वारंगल और कर्नाटक का टसर रेशम की सुप्रसिद्ध किस्में हैं। सूती वस्त्र साधारण क्षैतिज करघों पर

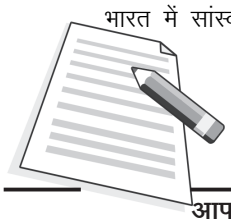

आपकी टिप्पणियाँ

बुने जा सकते हैं, जबकि जरीमदार रेशम के लिए अनेक पैडलों वाले जटिल करघों की जरूरत पड़ती है। रेशमी कपड़े सूती कपड़ों से ज्यादा महंगे पड़ते हैं और कम ही लोग उन्हें खरीद सकते हैं।

विभिन्न प्रकार के वस्त्रों के लिए विभिन्न उत्पादन–तकनीकों की जरूरत पड़ती है। 'टाइ एंड डाइ' नामक वस्त्र, जिन्हें विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं में बंधिनी (राजस्थान और गुजरात), इक़त (उड़ीसा) या चुंगड़ी (तमिलनाडु) कहा जाता है, ऐसी प्रक्रिया से बनाया जाता है, जिसमें कपड़ा और कभी–कभी सूत बांधा और रंगा जाता है।

कलमकारी वस्त्र आंध्र की एक जीवित परंपरा है। 'कलमकारी' शब्द का अर्थ है कलम से कारी यानी कार्य करना। इसके चित्रकारों को (चौदहवीं से सत्रहवीं शताब्दियों तक) दक्कनी सल्तनतों और अमीर वर्गों द्वारा संरक्षण प्रदान किया जाता था। उसमें चित्रित विषय मुस्लिम और हिंदू विषयों का मिश्रण होते थे। कितनी दिलचस्प बात है कि आज बेची जाने वाली 'कलमकारी' मशीन से बनाई और ब्लॉक से प्रिंट की गई होती है! असल में आज उत्पादित किया जाने वाला ज्यादातर कपड़ा बिजली के करघों पर बनाया जाता है।

पाठगत प्रश्न 30.1

1. बंधिनी तकनीक से आप क्या समझते हैं और बंधिनियां कहां बनाई जाती हैं?

2. 'कलमकारी' से क्या अभिप्राय है?, व्याख्या कीजिए।

3. सहीं या गलत का निशान लगाएं–
   (क) सूती कपड़े गरमी के मौसम में पहने जाते हैं।
   (ख) रेशमी कपड़े सूती कपड़ों से सस्ते होते हैं।
   (ग) बांधकर रंगे जानेवाले कपड़े जामदानी कहलाते हैं।
   (घ) नील और मजीठा वनस्पति रंग हैं।

30.3 साहित्य

अब हम अपने सम द्ध और विविधतापूर्ण साहित्य पर नजर डालेंगे, जो महाकाव्यों से लेकर लोकगीतों और शास्त्रीय से लेकर लोकप्रिय तक सभी रूपों में मिलता है।

भारत वह देश है, जहां अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। यहां 325 उपभाषाएं या बोलियां बोली जाती हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी उत्तर प्रदेश की मुख्य भाषा है और वहां के लोग 85 बोलियां बोलते हैं, जो हिंदी के क्षेत्रीय रूप हैं।

विषय की द ष्टि से हमारा साहित्य धार्मिक भी है और गैर–धार्मिक भी, जिसमें लोगों या महल के जीवन को लेखन का विषय बनाया गया है। संस्कृत में लिखे गए वेद हमारे धार्मिक साहित्य के अंग हैं, जबकि शूद्रक की म च्छाकटिका जिसका शाब्दिक अर्थ है मिट्टी का खिलौना, जैसी कृतियां सांसारिक विषयों पर लिखी गई हैं।

क्षेत्रीय रूपों की एक व्यापक श्ंखला भी पाई जाती है, विशेषकर बड़े महाकाव्यों के पुनर्कथन में। सभी जानते हैं कि जहां वाल्मीकि ने संस्कृत में 'आदिकाव्य' के नाम से प्रसिद्ध रामायण लिखी, वहीं तुलसीदास ने उसे हिंदी में लिखा जो 'रामचरितमानस' के नाम से विख्यात हैं। चोलो के दरबारी कवि कंबन ने तमिल में रामायण लिखी, जबकि तेलुगु में रामायण का लोकप्रिय रूप एक किसान महिला मोल्ला ने लिखा।

यह एक दिलचस्प बात है कि रचना लिखने की शैली भी लेखक की सामाजिक स्थिति से प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए, जहां कंबन कुलीन शासक वर्ग की भाषा और बिंग इस्तेमाल करते हैं, वहीं मोल्ला किसान महिला की तरह लिखती हैं और सूर्यास्त का वर्णन करते हुए वह कहती हैं कि सूरज इस तरह आसमान से नीचे चला गया जैसे कोई मजदूर दिन भर मेहनत करने के बाद लौट जाता है।

अब हम संक्षेप में महाभारत के कुछ क्षेत्रीय और लोक–रूपों को देखेंगे, जिसे संस्कृत में संत वेद व्यास द्वारा लिखा माना जाता है। महाभारत के एक तेलुगु रूप में कहा गया है कि जब युधिष्ठिर के नेत त्व में पांडव दुर्योधन के साथ पांसा खेलते हुए अपनी संपत्ति और स्वतंत्रता हार गए, तो द्रौपदी ने पांसे के खेल में भाग लेने के अपने अधिकार का इस्तेमाल किया। अपने विरोधी के प्रति तिरस्कार दर्शाते हुए उसने पांसे को लात मारकर फेंक दिया और अपने पतियों द्वारा हारी हुई चीजें जीतनी शुरू करदीं। दक्षिण भारत के अनेक भागों में द्रौपदी देवी के रूप में पूजी जाती हैं।

महाभारत के एक तमिल रूप में एक पांड्य रानी अलीरानी का उल्लेख मिलता है, जो पुरुषों से घणा करती थी और केवल स्त्रियों की सहायता से राज करती थी। कहा जाता है कि उसने अर्जुन को युद्ध में हरा दिया और बाद में उससे शादी कर ली। हिमालय क्षेत्र की महाभारत–कथाओं में भीम केंद्रीय पात्र है। हिमाचल प्रदेश के मंडी क्षेत्र में भीम और उसकी कबीलाई पत्नी हिडिंगा मुख्य देवता हैं। द्रौपदी द्वारा पांच भाइयों के साथ शादी करने की महाभारत की परंपरा के अनुसार बहुपति–प्रथा अभी भी मौजूद है। महाभारत के छत्तीसगढ़ी रूप पंडवानी में भी भीम केंद्रीय पात्र है। उत्तर–पूर्व के अनेक कबीली समुदाय सीधे भीम और हिडिंबा के वंशज होने का दावा करते हैं। उदाहरण के लिए, दीमापुर के दारंग कचारी खुद को भीम–नी–फा अर्थात भीम के बच्चे बताते हैं।

हालांकि महाभारत की अनेक घटनाओं और चरित्रों का अभिज्ञान उत्तर भारत से होता है, फिर भी महाभारत की एक समद्ध परंपरा है, जो पूरे भारत में फैली है। विभिन्न संप्रदाय उसे अपने–अपने ढंग से समझते हैं और उसमें विभिन्न स्थानीय कथाएं जोड़ते हुए उसे संप्रेषित करते हैं। इस प्रकार महाभारत लोगों की विभिन्न संस्कृतियों को प्रतिबिंबित करता है। वह शास्त्रीय वर्णनों से लेकर लोकगाथाओं तक में मिलता है।

पाठगत प्रश्न 30.2

1. वेद किस प्रकार के साहित्य का प्रतिनिधित्व करते हैं?

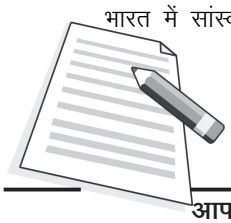

आपकी टिप्पणियाँ

2. भारत के किन क्षेत्रों में आप भीम और हिडिंबा की पूजा किए जाने की अपेक्षा करते हैं?

3. रामायण का हिंदी रूप किसने लिखा और वह किस नाम से जाना जाता है?

30.4 खाद्य संस्कृति

अब हम अपनी खाने की आदतों पर नजर डालते हैं। हम पाएंगे कि किस तरह उनमें एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में अंतर पाया जाता है और समय के साथ–साथ किस तरह वे अंतःक्रिया के कारण बदल गई है।

विभिन्न क्षेत्रों में उगने वाली फसलों के स्वरूप, विभिन्न संप्रदायों की सांस्कृतिक प्रथाओं और उपभोक्ता वर्ग/संप्रदाय या लोगों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति के कारण भारतीयों की खाने की आदतों में अंतर पाया जाता है। सिंधु–गंगा क्षेत्र का मुख्य भोजन जहां गेहूं हैं, वहीं दक्षिण भारतीयों का मुख्य भोजन चावल है क्योंकि विंध्याचल पर्वत के दक्षिण में स्थित क्षेत्रों में गेहूं बहुत कम उगता है।

खाद्यान्नों के पुरातात्विक प्रमाणों से हमें अपने पूर्वजों द्वारा खाए जाने वाले खाने के बारे में कुछ जानकारी मिलती है। उन निवास–स्थानों, जहां लोग वास्तव में रहे थे (जैसे बलूचिस्तान में मेहरग़ का पाषाणकालीन स्थल), गेहूं का प्रमाण मिलता है या फिर कर्नाटक में ब्रह्मगिरी और हल्लूर, आंध्र प्रदेश में पिकलिहल और तमिलनाडु में पैयमपल्ली जैसे दक्षिणी स्थलों पर विशेष रूप से चावल, रागी और कुथली के प्रमाण मिले हैं। पिकलिहल से मिले प्रमाण बताते हैं कि वहां के लोग पशुपालक थे, जो गाय–बैल और भेड़–बकरियां पालते थे।

पानी और अनाज एकत्र करने के साथ ही खाना पकाने के लिए भी बर्तन इस्तेमाल किए जाते थे। भारतीय पुरातत्ववेत्ताओं ने प्राचीन संस्कृतियों को उनके द्वारा बनाए गए बर्तनों, जैसे कि चित्रित धूसर बर्तन, काले पॉलिश किए हुए बर्तन आदि के आधार पर वर्गीकृत किया है। तमिलनाडु में अडिचनल्लूर जैसे कांस्ययुगीन पुरातात्विक स्थलों से कांसे और सोने के बर्तन भी मिले हैं। जाहिर है कि उनका इस्तेमाल धनी लोग करते थे।

ज्यादातर क्षेत्रों की अपनी अलग पाक–प्रणाली है। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु चावल–आधारित संस्कृतियां हैं। दक्षिण भारतीयों द्वारा बनाए जाने वाले इडली, डोसा और उपमा अब उत्तर भारत में भी लोकप्रिय हो गए हैं और उत्तर भारतीय प्रदेशों में इनकी सुलभता विभिन्न संप्रदायों में होने वाली अंतःक्रिया की प्रमाण है। पश्चिम बंगाल की तरह तटीय संस्कृति वाला केरल भी अपने मछली के पकवानों के लिए जाना जाता है। मुगलों के आगमन के साथ तंदूरी चिकन और सींख कवाब जैसे 'मुगलई' पकवान और तरबूज जैसे फल भारतीय पाक–प्रणाली के अंग बन गए। अवधी पाक–प्रणाली (अवध पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक क्षेत्र है) आज मुगलई नवाबी संस्कृति को प्रतिबिंबित करती है। सोलहवीं शताब्दी में यूरोपियनों, खासकर पुर्तगालियों ने भारतीय भोजन में आलू, टमाटर और हरी मिर्च का समावेश किया, जो अब हमारी पाक–क्रिया का अनिवार्य अंग है। इस दौरान प्लासबीन (फ्रांसीसी सेम) भी भारतीय पाक–प्रणाली का अंग बन गई। इस प्रकार सांस्कृतिक अंतःक्रिया ने हमारी खाने की आदतों में बदलाव किया है।

परिवार में एक साधारण भोजन में चावल या रोटी, दाल और सब्जी शामिल रहती हैं। घरों में दैनिक भोजन जहां आम तौर पर स्त्रियों द्वारा पकाया जाता है, वहीं बड़े स्तर पर यह काम प्रायः पुरुष करते हैं। भारत में अनेक गरीब लोग केवल दलिया खा पाते हैं। धनी लोग विभिन्न प्रकार का भोजन खा सकते हैं, जिसमें शाकाहारी और मांसाहारी दोनों तरह के पकवान शामिल हैं। मांसाहारी पकवान शाकाहारी पकवानों से ज्यादा महंगे होते हैं। शादी–ब्याह जैसे विशेष अवसरों पर सभी संप्रदाय अनेक पकवानों वाला प्रीतिभोज रखते हैं, जिसमें उनके क्षेत्र की अलग महक रहती है।

पाठगत प्रश्न 30.3

1. भारत की मुख्य फसलें कौन–सी हैं और वे किस तरह खान–पान की आदतों को आकार देती हैं?

   _____

2. दक्षिण भारत के कुछ लोकप्रिय पकवानों के नाम लिखिए।

   _____

3. निम्नलिखित का मिलान कीजिएः

रोटी	केरल
उपमा	पुर्तगाली
सींख कबाब	तमिलनाडु
मिर्च	उत्तर भारत
मछली	मुगलई

आपने क्या सीखा

हमने सांस्कृतिक उत्पादन के रूपों और क्षेत्रीय भिन्नताओं के साथ–साथ अपनी पहनने–ओढ़ने और खान–पान की आदतों के संदर्भ में सांस्कृतिक अंतःक्रिया के स्वरूप पर नजर डाली। हमने देखा कि हमारे प्रारंभिक पूर्वज मिट्टी के बर्तन जैसी वस्तुएं बनाते थे, जो उपयोगी होने के साथ–साथ सुंदर भी होती थीं। किंतु बाद के समय में चित्र जैसी कलाकृतियां शाही संरक्षण में बनने लगीं।

हमने यह भी देखा कि लोग जलवायु की जरूरतों के मुताबिक कपड़े पहनते हैं और पोशाकें एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में बदल जाती हैं। हमने कपड़े की किस्मों, आक तियों और कलमकारी व चुंगडी जैसे कुछ विशेष प्रकारों के बारे में भी जाना। साहित्य के खंड में हमने देखा कि भारतीय भाषाओं की व्यापक श्रंखला ने हमारे साहित्य की सम द्धि में योगदान किया है। यहां हमने महाभारत के कुछ क्षेत्रीय और लोक–रूपों पर भी गौर किया। अंत में हमने भारत के विभिन्न क्षेत्रों की खानपान की आदतों और उनमें सतत सांस्कृतिक अंतःक्रिया के जरिये आए बदलावों का अध्ययन किया।

पाठांत प्रश्न

1. अजंता और एलोरा की कलाओं के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. आज के फिल्मी होर्डिंग्स सचित्र पांडुलिपियों में पाई जानेवाली चित्रकला से किस रूप में भिन्न हैं?
3. परंपरागत भारतीय वस्त्रों में रंगों के महत्त्व का वर्णन कीजिए।
4. महाभारत महाकाव्य के कुछ क्षेत्रीय रूपों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।
5. भारत में क्षेत्रीय पाक–प्रणाली के स्वरूप और विविधता का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

चित्रकला

1. क. सही, ख. गलत, ग. गलत और घ. सही
2. प्रारंभिक गुफा–चित्र उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर और बांदा, मध्य प्रदेश के भीमबेटका और सिंगनपुर, विंध्याचल पर्वतमाला की महादेव पहाड़ियों और कर्नाटक के बेल्लारी में पाई जाती है।

वस्त्र और पोशाकें

1. बंधिनी की प्रक्रिया में सूत और कभी–कभी कपड़ा बांधकर रंगा जाता है। बंधिनियाँ गुजरात और राजस्थान, उड़ीसा के इकत और मदुरै (तमिलनाडु) मे चुंगडी नाम से बनाई जाती हैं।
2. 'कलमकारी' का शाब्दिक अर्थ है कलम के साथ कारी यानी कार्य करना।
3. क. सही, ख. गलत, ग. गलत और घ. सही
   1. संस्कृति में लिखे गए वेद हमारे धार्मिक साहित्य के अंग हैं।
   2. भीम और हिडिंबा हिमाचल प्रदेश के मंडी और किन्नौर क्षेत्र में पूजे जाते हैं।
   3. रामायण का हिंदी रूप तुलसीदास ने लिखा, जिसे रामचरितमानस के नाम से जाना जाता है।

खाद्य संस्कृति

1. भारत की मुख्य फसलें चावल और गेहूं हैं। चावल दक्षिण भारत की प्रमुख फसल है और इसलिए दक्षिण भारतीय मूलतः चावलभोजी हैं। चूंकि उत्तर भारत में बहुत गेहूं बहुतायत में पैदा होता है, इसलिए वह उत्तर भारतीयों का मुख्य भोजन है।
2. इडली, डोसा और उपमा दक्षिण भारतीरय पाक–प्रणाली के कुछ लोकप्रिय पकवान हैं।

3. निम्नलिखित का मिलान कीजिए के उत्तरः

रोटी	उत्तर भारत
उपमा	तमिलनाडु
सींख कबाब	मुगलई
मिर्च	पुर्तगाली
मछली	केरल

पाठान्त प्रश्नों के संकेत

1. देखिए अनुच्छेद 30.1
2. देखिए अनुच्छेद 30.1
3. देखिए अनुच्छेद 30.2
4. देखिए अनुच्छेद 30.3
5. देखिए अनुच्छेद 30.5

शब्दावली

जरी : बुनाई का पैटर्न, जिसमें आम तौर पर रेशमी कपड़े में सोने का धागा लगाया जाता है

पाक-प्रणाली : खाना पकाने की शैली

कुलीन : लोगों का एक चुनिंदा समूह या वर्ग

अग्निसह मिट्टी : भट्ठी में तपाई या पकाई गई मिट्टी के बर्तन या भवन–निर्माण–सामग्री बनाने के काम आती है

हिन्दुस्तानी नील : नील के पौधे से प्राप्त एक नीला रंग

मजीठा : मजीठ नामक लता की जड़ों और डंठलों को उबालकर निकाला जाने वाला लाल रंग

लघुचित्र : छोटे पैमाने पर बनाए गए चित्र

बहुपति-प्रथा : विवाह की पद्धति, जिसमें एक स्त्री के एक से अधिक पति होते हैं

सफ़वी : ईरान के फकीर सफी द्वारा चलाया गया राजवंश। यह शब्द अकसर भारतीय कला और वास्तुकला पर फारसी प्रभाव को सूचित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है

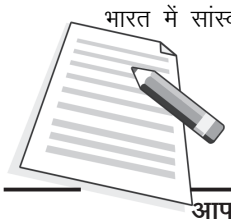

आपकी टिप्पणियाँ